



Shajarae Attariyya (Gujarati)

શ-બ-રખે

કાદિરિયા

ર-ઝવિયા

ઠિયાઠયા

અતારિયા



મઝારે ગૌસે પાક

મઝારે આ'લા હઝરત

શૈખે તરીકત, અઝીરે અહલે સુલ્ત, બાલિયે દા'વતે હરવામી, હઝરત અલવામા મૌલાના અબૂ ઠિવાલ

મુહમ્મદ ષલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ
السَّالِيَةِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

दुइद शरीफ़ की इमीलत

अमीरुल मुअमिनीन, उमरते सय्यिदुना
उमर बिन अत्ताब रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं :
बेशक दुआ जमीन व आस्मान के दरमियान
ठहरी रहती है और उस से कोई चीज डिपर की
तरफ़ नहीं जाती जब तक तुम अपने नबिय्ये
अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुइदे पाक न
पढ लो.

(ترمذی ج ۲ ص ۲۸ حدیث ۴۸۶)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

بِسْمِ اللّٰهِ کے ساتھ دُرُود کی نسبت سے ش-ج-ر-اے آلیخیا کادیرخیا ر-اویخیا پڑنے کے 7 م-دنی کूल

1 ش-ج-ر-اے آلیخیا کادیرخیا کے اवरاد
वगैरा पढने की हर उस इस्लामी भाई और
इस्लामी बहन को इजाजत है जो सिक्सिले
आलिखिया कदिरखिया र-अविय्या में दाखिल है.

2 श-जरह शरीफ में दिये हुए तमाम
अवरादो वजाईफ के हर हई को उस के दुरुस्त
मजरज के साथ अदा करना लाजिमी है. ⁽¹⁾

مدینه

1 : इस मसाले की तफसील दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे
मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ कितान, अदारे शरीअत जिल्द 1
सईहा 557 पर मुला-हजा कीजिये. सगे मदीना غَفَى عَنْهُ



3 अलिफ़ और ع, س और ص, ه और ح
वगैरा वगैरा में जो लाज़िमी इर्क़ नहीं कर सकता
यहां तक के भा'ना तब्दील हो जाते हों उसे
येह अवराद पढने की इजाज़त नहीं और
ખબરદાર ! गलत पढने की सूरत में नुक़सान का
अन्देशा है. दिहाज़ा इन अवराद वगैरा को
किसी सहीह कुरआन जानने वाले सुन्नी कारी
या सुन्नी आदिम को सुना दीजिये.

4 श-ज रह शरीफ़ में जिन अवराद के लिये
तरतीब वार पढना लिखा है उन को बितरतीब
पढेंगे तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** ब-र-कतें ज़ियादा मिलेंगी.

5 अपने लिये उतने ही अवराद मुन्तख़ब

કીજિયે જિતને આપ નિભા સકેં.

6 અવરાદ કે તરજમે પઢના ઝરૂરી નહીં.

7 હર વિદ કે અવ્વલ વ આખિર એક બાર દુરૂદ શરીફ પઢિયે, હાં એક નિશસ્ત મેં અગર ઝિયાદા અવરાદ પઢેં તો ઈખ્તિયાર હૈ કે ઈખ્તિદાઅન એક બાર ઔર તમામ અવરાદ ખત્મ કરને કે બા'દ એક બાર દુરૂદ શરીફ પઢ લેં.

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَيَّ مُحَمَّد

દિન યા રાત મેં કિસી બી
એક વસ્ત રોઝાના પઢિયે

1 اسْتَغْفِرُ اللهَ الْعَظِيمَ وَالتَّوْبُ إِلَيْهِ ط 70 બાર.



2 166 बार. لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ

3 مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

3 बार. 4 कोई सा भी दुरुद शरीफ़ 111 बार.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पञ्चाना नमाम के
बा'द के सात अवराम

1 بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالشَّسِّ وَالْقَمَرِ وَالنُّجُومِ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهَا لَا

لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ

دینہ

1: तर-ज-मअे कन्जुल धिमान : और सूरज और चांद और तारों को बनाया सब उस के हुकम के दबे हुअे सुन लो उसी के हाथ है पैदा करना और हुकम देना, बडी ब-र-कत वाला है अल्लाह रब सारे जडान का. (प: 8, अ: 4: 5)



2 گِرِدِ مَنْ وَگِرِدِ خانَهُ مَنْ وَگِرِدِ زَنْ

وَفِرَزَنْدَانِ مَنْ وَگِرِدِ مالِ وَدَوْشْتانِ مَنْ

(1) حِصارِ حِفاظتِ تُوشَوَدَ وَتُونِگَهَدارِ باشی-

3 गुलशता दोनों आ'माल तरतीब वार
अेक अेक बार पढने के आ'द अब तीसरा
अमल इस नमाज के लिये मुकरर कर्दा
पन्ज गन्जे कादिरिया का विद पढिये और
हर वक्त के पन्ज गन्ज के अमल के आ'द
अगर 72 बार **يَا بَاسِطُ** भी पढ लिया करें तो

دینہ

1: (یا اَللّٰہُ عَزَّوَجَلَّ!) मेरे आस पास और मेरे घर के आस पास
और मेरे बच्चों और बीवी के आस पास और मेरे माल और
अहबाब के आस पास हिफाजत का हिसार हो और तू मुहाफिज व
निगहबान हो.

ઝિયાદા બેહતર છે.

પન્જ ગન્બે કાદિરિયા

સબ સો સો બાર (અવ્વલ વ આખિર તીન તીન બાર દુરુદ શરીફ) કે સાથ પઢિયે. ઈસે હમેશા પઢને સે
إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ દીન વ દુન્યા કી બે શુમાર બ-ર-કતે
ઝાહિર હોંગી. હર ઈસ્મ પેશ (૧) કે સાથ પઢના છે.

બા'દે નમાઝે ફજા : **يَا عَزِيزُ يَا اللَّهُ**

બા'દે નમાઝે ઝોહર : **يَا كَرِيمُ يَا اللَّهُ**

બા'દે નમાઝે અસ્ર : **يَا جَبَّارُ يَا اللَّهُ**

બા'દે નમાઝે મગરિબ : **يَا سَتَّارُ يَا اللَّهُ**

બા'દે નમાઝે ઈશા : **يَا غَفَّارُ يَا اللَّهُ**



पन्ज वक्ता नमाजों के सुनन व नवाझिल से इरागत के आ'द जैल के अवराद पढ लीजिये, सहूलत के लिये नम्बर जरूर दिये हैं मगर इन में तरतीब शर्त नहीं है.

4 “आ-यतुल कुर्सी” अक अक बार पढने वाला भरते ही दाखिले जन्नत हो. ⁽¹⁾

5 **أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ**
الْقَيُّومُ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ ⁽²⁾ तीन तीन बार पढिये,
इज्जिलत : पढने वाले के गुनाह मुआफ़ हों

دینہ

1 : شُعَبُ الْإِيمَانِ ج ٢ ص ٤٥٨ حدیث ٢٣٩٥ :

2 : तरजमा : मैं अल्लाह से मुआफी मांगता हूँ जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह जिन्दा है काईम रहने वाला है और उस की बारगाह में तौबा करता हूँ.

अगर्ये वोह मैदाने ज़िहाद से भागा हुवा हो. (1)

6 तस्बीहे इतिमा : **سُبْحَانَ اللَّهِ** 33 बार,

اللَّهُ أَكْبَرُ 33 बार, **يَعْلَمُ** 99 हुअे,

आफिर में **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ**

لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (2)

अेक बार पढ कर **100** का अदद पूरा कर ले.

इत्तीलत : पढने वाले के गुनाह अप्श दिये

जाअेंगे अगर्ये समुन्दर के आग के बराबर हों. (3)

दीने

1 : 3201 र्म 104 व 2 मुस्नफ़ अब्द रज़ाक ज 2 व 2 तर्जमा : अद्लाह
के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह यक्ता व यगाना है उस का कोई
शरीक नहीं, उसी का मुल्क है, उसी की हम्द है, वोह हर चीज़ पर
कादिर है. 3 : 301 व 302 मुस्नफ़ 301 व 302 मुस्नफ़ 301 व 302 मुस्नफ़



7

હર નમાઝ કે બા'દ પેશાની કે અગલે હિસ્સે પર હાથ

રખ કર પઢિયે : **بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ**

الرَّحِيمُ ط اللَّهُمَّ اذْهَبْ عَنِّي الْهَمَّ وَالْحُزْنَ ط (1)

(પઢને કે બા'દ હાથ ખીચ કર પેશાની તક લાઈયે)
ફઝીલત : **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** હર ગમ વ પરેશાની સે
બચેંગે. (2)

મેરે આકા આ'લા હઝરત ઈમામે અહલે
સુન્નત મૌલાના શાહ અહમદ રઝા ખાન **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ**
ને મઝકૂરા દુઆ કે આખિર મેં મઝીદ ઈન અલ્ફઝઝ
કા ઈઝાફા ફરમાયા હૈ, **وَعَنْ أَهْلِ السُّنَّةِ (3)**

دینہ

1 : તરજમા : અલ્લાહ **عَزَّوَجَلَّ** કે નામ સે મેં શુરૂઆ કરતા હૂં જિસ કે
સિવા કોઈ મા'બૂદ નહીં વોહ રહમાન વ રહીમ હૈ. ઐ અલ્લાહ **عَزَّوَجَلَّ**
મુઝ સે ગમ વ મલાલ દૂર ફરમા. **2** : અલ વઝી-ફતુલ કરીમા, સ. 23

3 : ઐઝન, સ. 24

(યા'ની ઓર અહલે સુન્નત સે) (લિહાઝા **وَالْحُرْن**
કે બા'દ ફિર **وَعَنْ أَهْلِ السُّنَّةِ** મિલા લીજિયે)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

સુબ્હ વ શામ

પઢને કે 10 આ'માલ

પહલે “સુબ્હ” ઓર
“શામ” કી તા'રીફ
ઝેહ્ન નશીન ફરમા
લીજિયે. આધી રાત ઢલે સે સૂરજ કી પહલી
કિરન ચમકને તક “સુબ્હ” હૈ. ઈસ સારે વકફે મેં
જો કુછ પઢા જાએ ઉસે સુબ્હ મેં પઢના કહુંગે ઓર
દો પહર ઢલે (યા'ની ઈબ્તિદાએ વક્તે ઝોહર) સે
લે કર ગુરૂબે આફતાબ તક “શામ” હૈ. ઈસ
પૂરે વકફે મેં જો કુછ પઢા જાએ ઉસે શામ મેં



पठना कहेंगे. हर सुबह और शाम जैल में दिये
हुअे आ'माल (पठने में नम्बरों की तरतीब की कोछ
कैद नहीं) पठ लेने के बे शुमार इवाछद हैं :

1 तीनों **कुल⁽¹⁾** तीन तीन बार पढिये.
इलीलत : पठने वाले के लिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** हर
बला से महकूछी है. सुबह पढे तो शाम तक और
शाम पढे तो सुबह तक. ⁽²⁾

2 **أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ**
(3) **شَرِّ مَا خَلَقَ** तीन तीन बार पढिये. इलीलत :

مدینه

1 : सू-रतुल छप्लास, सू-रतुल इलक और सू-रतुन्नास **2** : अल
वजी-इतुल करीमा, स. 13 **3** : मैं अल्लाह के कामिल कलिमात
के वासिते से सारी मज्लूक के शर से पनाह मांगता हूं.

सांप, बिच्छू वगैरा मूजियात से पनाह हासिल हो।⁽¹⁾

3 فَسُبْحَانَ اللَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ
تُصْبِحُونَ ﴿١٤﴾ وَلَهُ الْحَدُّ فِي السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِينَ تُظْهِرُونَ ﴿١٥﴾
يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ
مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا

(2) ع وَكَذَلِكَ تُخْرَجُونَ ﴿١٦﴾ अक अक बार पढिये.

دینہ

1 : अल वजी-इतुल करीमा, स. 14 2 : तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : तो अल्लाह की पाकी भोलो जब शाम करो और जब सुबह हो और उसी की ता'रीफ है आस्मानों और जमीन में और कुछ दिन रहे और जब तुम्हें दो पहर हो. वोह जिन्दा को निकालता है मुर्दे से और मुर्दे को निकालता है जिन्दा से और जमीन को जिलाता है उस के मरे पीछे, और यूँही तुम निकाले जाओगे.

(प. 17, 18)



इकीवत : जिस किसी दिन सभ वजाईर रह जाअें तो येह तन्हा उन सभ की जगह काई है नीअ रात दिन के हर नुकसान की तलाई है. ⁽¹⁾

4 **أَعُوذُ بِاللَّهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ**

⁽²⁾ **ط** तीन तीन बार, फिर सू-रतुल उशर की आबिरी तीन आयात या'नी **هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ** ता भत्मे सूरह पढिये. अक बार, इकीवत : सुबह पढे तो शाम तक सत्तर⁷⁰ हज़ार फिरिश्ते उस के लिये धस्तिग़ार करें और उस दिन भरे तो शहीद हो और शाम को पढे तो सुबह तक येही इकीवत है. ⁽³⁾

مدینه

1 : अल वजी-इतुल करीमा, स. 16 **2** : में सुनने वाले, जानने वाले अल्हाल **عَزَّوَجَلَّ** की पनाह मांगता हूं भरदूद शैतान से.

3 : अैअन, स. 17, २९३१ हदीथ ६२३ **ص** ६४ **ज** ६४ **ترمذی**

5 **اللَّهُمَّ إِنَّا نَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ نُشْرِكَ بِكَ**

شَيْئًا نَعْلَمُهُ وَنَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا نَعْلَمُهُ ط (1)

तीन तीन बार पढ़िये. इज़ीलत : **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

पढ़ने वाले का आतिमा ईमान पर हो. (2)

6 **بِسْمِ اللَّهِ عَلَى دِينِي بِسْمِ اللَّهِ عَلَى نَفْسِي**

ط (3) وَوَلْدِي وَأَهْلِي وَمَالِي तीन तीन बार पढ़िये.

دینہ

1 : ओ अल्लाह! हम तेरी पनाह मांगते हैं इस बात से के किसी शै को तेरा शरीक बनाएं जान बूझ कर और हम अपिशिश मांगते हैं तुज से उस (शिक) की जिस को हम नहीं जानते. **2 :** अल वजी-इतुल करीमा, स. 17 **3 :** अल्लाह तआला के नाम की अ-र-कत से मेरे दीन, जान, औलाद और अहल व माल की हिफाजत हो.



ફઝીલત : પઢને વાલે કે દીન, ઈમાન, જાન, માલ, બચ્ચે સબ મહફૂઝ રહે. ⁽¹⁾ (إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ)

7 بِسْمِ اللَّهِ جَلِيلِ الشَّانِ عَظِيمِ الْبُرْهَانِ
شَدِيدِ السُّلْطَانِ مَا شَاءَ اللَّهُ كَانَ، أَعُوذُ

⁽²⁾ ط بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ એક એક બાર

પઢિયે. ફઝીલત : પઢને વાલા શૈતાન ઓર ઉસ કે લશ્કરોં સે મહફૂઝ રહે. ⁽³⁾

دینہ

1 : એઝન 2 : અલ્લાહ જલીલુશ્શાન, અઝીમુલ બુરહાન, શદીદુસ્સુલ્તાન કે નામ સે ઈબ્તિદા જો અલ્લાહ ઈઝ્ઝોજલ્ યાહતા હૈ વોહી હોતા હૈ. મૈં પનાહ માંગતા હૂં અલ્લાહ ઈઝ્ઝોજલ્ કી શૈતાન મરદૂદ સે.

3: અલ વઝી-ફતુલ કરીમા, સ. 18

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ،
وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ، وَأَعُوذُ بِكَ
مِنَ الْجُبْنِ وَالْبُخْلِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ غَلْبَةِ

(1) **الدَّيْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ** ط अक अक बार पढिये.

इतीवत : गम व अलम से बरेंगे (إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ)

और अदाअे कर्के के लिये सुबह व शाम ग्यारह

ग्यारह बार पढिये. (2)

9 “सय्यदुल इस्तिअफ़ार” अक अक बार या
तीन तीन बार पढिये. इतीवत : पढने वाले के

دینہ

1 : इलाही عَزَّوَجَلَّ में गम व अलम, इज्ज व सुस्ती, बुज्जदिली व
बुज्जल, कर्के के ग-लबे और लोगों के कहर से तेरी पनाह मांगता हूं.

2 : अल वजी-इतुल करीमा, स. 19



गुनाह मुआफ़ हों और उस दिन रात भरे तो शहीद और अपने जिस झे'ल से नुकसान का अन्देशा होता है अस्वाह عَزَّوَجَلَّ उस से महकूम रहता है.

सय्यदुल धस्तिग़र

اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، خَلَقْتَنِي
وَأَنَا عَبْدُكَ وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا
اسْتَطَعْتُ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ
أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ، وَأَبُوءُ لَكَ بِذَنْبِي

فَاغْفِرْ لِي فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ ط (1)

આ'લા હઝરત, ઈમામે અહલે સુન્નત, મૌલાના શાહ અહમદ રઝા ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ને ઈસ ઈસ્તિઝ્ફાર પર મઝીદ ઈન અલ્ફઝાઝ કા ઈઝાફા ક્રિયા હૈ : (2) “ **وَاعْفِرْ لِكُلِّ مُؤْمِنٍ وَمُؤْمِنَةٍ** ”

(લિહાઝા આખિર મેં યેહ અલ્ફઝાઝ ભી પઢ લીજિયે)

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِينُ ط 10

دینہ

1: ઈલાહી તૂ મેરા રબ હૈ, તેરે સિવા કોઈ મા'બૂદ નહીં, તૂને મુઝે પૈદા ક્રિયા, મેં તેરા બન્દા હૂં ઓર બ કદરે તાકત તેરે અહ્દો પૈમાન પર કાઈમ હૂં, મેં અપને ક્રિયે કે શર સે તેરી પનાહ માંગતા હૂં, તેરી ને'મત કા જો મુઝ પર હૈ ઈક્રાર કરતા હૂં ઓર અપને ગુનાહોં કા એ'તિરાફ કરતા હૂં, મુઝે બખ્શ દે કે તેરે સિવા કોઈ ગુનાહ નહીં બખ્શ સકતા.

2: ઓર હર મોમિન ઓર મોમિના કી બખ્શિશ ફરમા.

(અલ વઝી-ફતુલ કરીમા, સ. 20, 21)



सो सो बार पढिये. इमीदत : दुन्या में झाका न
हो, कभ्र में वइशत न हो, एशर में घबराहट न
हो ⁽¹⁾ **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

सिर्फ सुब्ह पढने के सात आ'माल

1 بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ

الْعَظِيمِ ط इमीदत: हर काम बने, शैतान से

महकूठ रहे. ⁽²⁾ मुन्द-र-जमे बाला दुआ **“अल**

वजी-इतुल करीमा” में **“सुब्ह”** के आ'माल

में दर्ज है मगर पढने की ता'दाद नहीं लिखी

مدینه

1 : अल वजी-इतुल करीमा, स. 21 **2** : अऊन

અલબત્તા **“મદારિજુન્નુબુવત”** જિલ્દ અવ્વલ સફહા 236 પર વક્ત કી કેદ લગાએ બિગૈર એક રિવાયત હઝરતે સય્યિદુના અનસ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ سے નક્લ કી ગઈ હૈ કે જો કોઈ ઊપર દી હુઈ દુઆ દસ બાર પઢે વોહ ગુનાહોં સે એસા પાક હો જાતા હૈ જૈસા કે ઉસ દિન થા જબ પૈદા હુવા નીઝ દુન્યા કી સત્તર⁷⁰ બલાઓં સે આફિયત દી જાતી હૈ જૈસા કે જુનૂન (પાગલ પન), જુઝામ, બરસ (યા'ની કોઢ) ઔર રીહ વગૈરા.

2 સૂ-રતુલ ઈખ્લાસ 11 બાર પઢિયે. ફઝીલત : અગર શૈતાન મઅ અપને લશ્કર કોશિશ કરે કે ઈસ સે ગુનાહ કરાએ ન કરા સકે જબ તક કે યેહ ખુદ ન કરે.

(અલ વઝી-ફતુલ કરીમા, સ. 21)

3 **يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ** 41 बार.

इकीलत : **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** उस का दिल मिनदा
रहेगा और इमान पर जातिमा होगा. (अैउन)

4 **سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ** तीन बार.

इकीलत : जुनून (पागल पन), जुजाम व बरस
(कोठ) और नाबीना होने से बचे. (अैउन, स. 22)

5 तिलावते कुरआने अकीम कम अऊ कम
अेक पारह. हतल इम्कान तुलूअे शम्स से पहले
हो और अगर आइताब निकल आअे तो कम
अऊ कम बीस मिनट तक ठहर जाईये और
जिको दुइद शरीफ में मशगूल रहिये यहां तक

કે આફતાબ બુલન્દ હો જાએ કે જિન તીન વક્તોં મેં
નમાઝ ના જાઈઝ હૈ તિલાવત ખિલાફે ઓલા હૈ.

6 દલાઈલુલખૈરાતશરીફ, એક હિઝૂબ.

۞ **ફાતિહએ**
સિલ્સિલા ۞
دینہ

7 હર રોઝ બા'દ

નમાઝે ફજ (રિસાલે કે
આખિર મેં દિયા હુવા) “મન્ઝૂમ શ-જ-રએ
આલિયા” એક બાર પઠ લિયા કીજિયે. ઈસ કે
બા'દ “**દુરૂદે ગૌસિયા**” સાત બાર, “**અલ હમ્દ**
શરીફ” એક બાર, “**આ-યતુલ કુર્સી**” એક બાર,
“**કુલ હુવલ્લાહ** શરીફ” સાત બાર, ફિર “**દુરૂદે**
ગૌસિયા” તીન બાર પઠ કર ઈસ કા સવાબ
બારગાહે રિસાલત મઆબ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

دُرِّدے گوسیخیا

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ
مَعْدِنِ الْجُودِ وَالْكَرَمِ وَالْإِبْرَاهِيمِ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ ط

﴿भा'दे नमामे﴾ बिगैर पाउं बढले, बिगैर
इ४ व असरः कलाम किये 10, 10 बार
دينه

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ
الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ يُحْيِي
وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ط (1)

دينه

1 : अल्लाह उँ उँ के सिवा कोरु भा'बूढ नही वोड यकता व यगाना है.
उस का कोरु शरीक नही उसी का मुल्क है उसी की इम्द उसी के कब्जे में
भैर है. जिलाता और मारता है और हर चीज पर कादिर है.



ફઝીલત : પઢને વાલા હર બલા વ આફત વ શૈતાન વ મકરુહાત સે બચે. ગુનાહ મુઆફ હોં, ઉસ કે બરાબર કિસી કી નેકિયાં ન નિકલેં. ⁽¹⁾

(અલ વઝી-ફતુલ કરીમા, સ. 25)

બા'દે નમાઝે ફજ્ર વ મગરિબ

1 ⁽²⁾ **اللَّهُمَّ اجْرِنِي مِنَ النَّارِ** સાત સાત બાર પઢિયે. ફઝીલત : પઢને વાલા ઉસ દિન યા રાત મેં મરે તો અલ્લાહ **عَزَّوَجَلَّ** ઉસે જહન્નમ સે મહફૂઝ રખેગા. ⁽³⁾

دینہ

1 : મુસ્નદે અહમદ કી રિવાયત મેં નમાઝે ફજ્ર વ મગરિબ કે બા'દ પઢને કા ઝિક આયા હૈ દૂસરી રિવાયત મેં ફજ્ર વ અસ્ર આયા હૈ ઓર હ-નફિયા કે મઝહબ સે ઝિયાદા મુનાસિબ યેહી હૈ. (બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 541) **2** : ઈલાહી મુઝે જહન્નમ સે બચા.

3 : ૦૦૭૧ હદિથ ૬૧૦ વ ૬૬૫

2 रोजाना बा'दे नमाजे इज सूरज तुलूअ होने से पहले और बा'दे नमाजे मगरिब मुन्द-र-जमे जैल यारों दुआअें दस दस बार पाबन्दी से पढने वाले के तमाम ज़रूरी काम बनेंगे और दुश्मन भी मग़्लूब होगा. (ان شاء الله عزوجل)

● حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ

(1) وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۞

(2) رَبِّ إِنِّي مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ

(3) رَبِّ إِنِّي مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرْ

دینہ

- 1:** तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : मुजे अस्लाह काई है उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं मैं ने उसी पर भरोसा किया और वोह अउे अर्श का मालिक है. (التوبه: १२९) **2:** अै मेरे रब ! मुजे तकलीफ़ पड़ोयी और तू सभ मेहूर (मेहूरबानी करने) वालों से बढ कर मेहूर वाला है. **3:** अै मेरे रब ! मैं मग़्लूब हूँ और तू मेरा बढला ले.



(1) سَيُّزَمُ الْجَمْعُ وَيُوْتُونَ الدُّبْرَ ﴿٢٥﴾

બા'દે નમાઝે
ફજ હજ વ
ઉમ્રે કા સવાબ
دینہ



બા'દે નમાઝે ફજ બિગૈર
પાઉં બદલે બૈઠા હુવા ઝિકે
ઈલાહી મેં મશ્ગૂલ રહે યહાં
તક કે આફતાબ બુલન્દ હો યા'ની તુલૂએ
કનારએ શમ્સ કો કમ અઝ કમ બીસ મિનટ
ગુઝર જાએં ઉસ વક્ત દો રકઅત નમાઝ નફલ
પઢે પૂરે હજ વ ઉમ્રહ કા સવાબ લે કર પલટે.

(ترمذی ج ۲ ص ۱۰۰ حدیث ۵۸۶، س. 26، (अल वजी-इतुल करीमा,

હદીસે પાક કે ઈસ હિસ્સે “અપને મુસલ્લે મેં
બૈઠા રહે” કી વઝાહત કરતે હુએ હઝરતે

دینہ

1 : तर-ज-मअे क-जुल ईमान : अब लगार्ई जाती है येह जमाअत
और पीठें डैर देंगे. (प 27, القمر: 45)



 सय्यिदुना अल्लामा अली कारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي
 इरमाते हैं : या'नी भस्त्रिद या घर में ँस ङाल में
 रहे के त्रिक या गौरो त्रिक करने या ँल्मे दीन
 सीभने सिभाने या बैतुल्लाह के तवाङ में
 भशगूल रहे नीज सिई ङैर ङी ङोले के ङारे में
 इरमाते हैं : या'नी इञ्ज व ँशराक के दरभियान
 ङैर या'नी त्मलाँ के सिवा कोँ गुङ्त-गू न करे
 क्यूं के येह वोह ङात है जिस पर सवाभ मुरततभ
 ङोता है.

(مِرْقَاة ج ٣ ص ٤٩٦ تَحْتِ الْحَدِيثِ ١٣١٧)

रात के वक्त
के चार आ'भाव
 دينه

गुरुभे आङ्ताभ से ले
 कर सुभे सादिक तक
 रात कलवाती है, ँस
 वक्के में जो कुछ पढेंगे



ਉਸੇ “ਰਾਤ” ਮੇਂ ਪਠਨਾ ਕਛਾ ਜਾਏਗਾ. ਮ-ਸਲਨ ਨਮਾਜੇ ਮਗਰਿਬ ਕੇ ਆ’ਦ ਫੀ ਅਗਰ ਕੋਈ ਵਿਦ ਪਠਾ ਜਾਏ ਤੋ ਉਸੇ ਰਾਤ ਮੇਂ ਪਠਨਾ ਕਛੇਂਗੇ. ਰਾਤ ਮੇਂ ਛੋ ਸਕੇ ਤੋ ਯੇਹ ਪਠ ਵੀਜ਼ਿਏ :

1 **ਸੂ-ਰਤੁਲ ਮੁਲਕ** : ਅਯਾਏ ਕਫ਼ਰ ਸੇ ਨਜ਼ਾਤ ਹੈ. ⁽¹⁾

2 **ਸੂ-ਰਅੇ ਯਾਸੀਨ** : ਮਗ਼ਿਰਤ ਹੈ. ⁽²⁾

3 **ਸੂ-ਰਤੁਲ ਵਾਕਿਅਹ** : ਝਾਕੇ ਸੇ ਅਮਾਨ ਹੈ. ⁽³⁾

4 **ਸੂ-ਰਤੁਦੁਖਾਨ** : ਸੁਯੁਹ ਈਸ ਛਾਲ ਮੇਂ ਉਠੇ ਕੇ ਸਤਰ⁷⁰

ਛਮਾਰ ਝਿਰਿਸ਼ਤੇ ਈਸ ਕੇ ਲਿਏ ਈਸ਼ਿਗ਼ਾਰ ਕਰਤੇ ਛੋਂ. ⁽⁴⁾

دینه

1: **السَّنُّ الْكُبْرَى لِلنِّسَاءِ** ج 6 ص 179 حديث 10547

2: **شُعْبُ الْإِيمَان** ج 2 ص 480 حديث 2462

3: **أَيْضاً** ص 491 حديث 2497 4: **تِرْمِذِي** ج 4 ص 406 حديث 2897

सोते वक़्त के सात आ'माल

1 आ-यतुल कुर्सी એક
બાર પઢિયે. ફઝીલત :
अल्लाह عزوجل की तरफ़
से सुष्क तक એક निगह्बान (ફિરિश्ता) मुकरर
हो और शैतान करीब न आओ. **اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** उस
के घर और गिर्द के घरों में योरी से पनाह हो.
आसेब व जिन्न का दखल न हो. ⁽¹⁾

2 तस्बीहे इतिमा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا) पढिये.
इज़ीलत : सुष्क पुश पुश उठे और दीगर बे
शुमार इवाँद. ⁽²⁾

3 अल उम्द शरीफ़ और कुल हुवल्लाह
دینہ

1 : अल वज़ी-इतुल करीमा, स. 30 **2** : अज़न



शरीफ़ अेक अेक बार. ⁽¹⁾

4 ँषुतुदअे सू-रतुल अ-करु से **مُفْلِحُونَ**

तक और फिर **أَمِنَ الرَّسُولُ** से अतुे सूरु तक. ⁽²⁾

5 सू-रतुल कुरु की आषुरी यार आयतें

या'नी “ **إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا** ” से अतुे सूरु

तक. इअीलत : रात में या सुअु ञस

वक्त ञगने की नयत से पठें आंअ

अुदेगी. ⁽³⁾ (إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ)

دینه

1 : التَّرغِيبُ وَالتَّرهِيبُ ج ١ ص ٢٣٥ حدیث ١٠

2 : अल वअी-इतुल करीमा, स. 31

3 : अल वअी-इतुल करीमा, स. 33, ٣٤٠٦ حدیث ٥٤٦ ج ٢ ص ٢

سُورَةُ كُذِّبِ كِي آجِيرِي يَارِ آيَات

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ
لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٤﴾ خَالِدِينَ فِيهَا
لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾ قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ
مِدَادًا لَكَلِمَتِ رَبِّي لَنَفَدَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ
تُنْفَذَ كَلِمَتُ رَبِّي وَلَوْ جُنَّابِثْلِهِ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾
قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَىٰ أَنبِيَاءِ
إِلَهُكُمْ إِلَهُ وَاحِدٌ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ
رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ
بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ﴿١١٠﴾



6 દોનોં હાથોં કી હથેલિયાં ફેલા કર તીનોં **કુલ** શરીફ એક એક બાર પઢ કર ઉન પર દમ કર કે સર ઓર ચેહરા ઓર સીને ઓર આગે પીછે જહાં તક હાથ પહોંચેં સારે બદન પર ફેરિયે. ફિર દોબારા, સેહબારા (યા'ની તીસરી બાર) ઈસી તરહ કીજિયે. ફઝીલત: (إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ) હર બલા સે મહફૂઝ રહેંગે. (અલ વઝી-ફતુલ કરીમા, સ. 33)

7 સૂરએ **قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ** પર ખાતિમા કરે. ઈસ કે બા'દ કલામ કી હાજત હો તો બાત કર કે ફિર ચેહી સૂરત પઢ લે, કે ઈસી પર ખાતિમા હોગા. (إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ) (ઐઝન, સ. 34)

બેદાર હોને પર પઢિયે

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا

(1) **وَالْيَهُ النُّشُور** इलीलत : पढने वाला
 कियामत में भी **عَزَّوَجَلَّ** अल्लाह **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** की
 उम्द करता हुवा उठे. (2)

الدُّعَاءُ नमाजे एशा पढने के बा'द कुए
مَدِينَةٍ ढेर सो रहे फिर रात में सुब्हे
 सादिक से पहले जिस वक्त आंख खुले
 अगर्ने नमाजे एशा पढने के बा'द थोडी ढेर सो
 जाने के बा'द आंख खुल जाये. तो वुजू कर के कम
 अज कम दो रकअत तहजजुद पढ लीजिये.
 सुन्नत आठ रकअत हैं और मा'भूले मशाएषे
 किराम **رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام** बारह रकअत. किरामत का

दुआ

1 : तमाम भूबियां अल्लाह तआला के लिये जिस ने हमें मौत
 (नींद) के बा'द हयात (बेदारी) अता इरमाई और हमें उस की
 तरफ लौटना है. (بخاری ج ٤ ص ١٩٢ حدیث ٦٣١٢)

2 : अल वजी-इतुल करीमा, स. 34



ઈખ્તિયાર હૈ જો ચાહે પઢિયે, બેહતર યેહ હૈ કે જિતના કુરઆને કરીમ યાદ હો ઉસ કી તિલાવત નમાઝે તહજજુદ કી રકઅતોં મેં કીજિયે. અગર પૂરા કુરઆને કરીમ હિફઝ હૈ તો કમ સે કમ ત્રીન રાત ઓર ઝિયાદા સે ઝિયાદા ચાલીસ રાત મેં ખત્મ કી સઆદત હાસિલ કીજિયે. અગર ચાહેં તો હર રકઅત મેં ત્રીન ત્રીન બાર **સૂ-રતુલ ઈબ્લાસ** પઢ લીજિયે કે જિતની રકઅતેં પઢેંગે ઉતને ખત્મે કુરઆને કરીમ કા સવાબે અઝીમ મિલેગા. (તફસીલી મા'લૂમાત કે લિયે દા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી મતબૂઆ કિતાબ, **મ-દની પન્જસૂરહ** મેં શામિલ ફેઝાને નવાફિલ કા મુતા-લઆ ફરમાઈયે)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

કામ અટક ગમે હોં તો....



(1)

اللَّهُ رَبِّي لَا شَرِيكَ لَهُ ط

જાઈએ હાજત વ કામ્યાબી
ઔર દુશ્મનોં કી મગ્લૂબી કે
લિયે મુન્દ-ર-જએ ઝૈલ
વઝાઈફ પઢિયે :

(874) બાર, અવ્વલ વ આબિર ગ્યારહ ગ્યારહ
મર્તબા દુરુદ શરીફ. મુરાદ કે હાસિલ હોને તક
રોઝાના પઢિયે, વક્ત કી કોઈ કૈદ નહીં. બા વુઝૂ
કિબ્લા રૂ દો ઝાનૂ બૈઠ કર પઢિયે ઔર ઈસી
કલિમે કો ઉઠતે બૈઠતે, ચલતે ફિરતે, વુઝૂ બે વુઝૂ
હર હાલ મેં બે ગિનતી વ બે શુમાર ઝબાન પર

دینہ

1 : તરજમા : અલ્લાહ ઈરોજલ મેરા રબ હૈ ઉસ કા કોઈ શરીક નહીં.



જારી રખિયે. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** મુરાદ પૂરી હોગી.

2 ⁽¹⁾ **حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ** (143)

સાઢે ચાર સો (450) બાર અવ્વલ વ આખિર ગ્યારહ ગ્યારહ મર્તબા દુરૂદ શરીફ, તા હુસૂલે મુરાદ રોઝાના પઢિયે. (ઇસ મેં ભી વક્ત કી કોઈ કૈદ નહીં) મુરાદ પૂરી હોને કે લિયે બેહતરીન અમલ હૈ. નીઝ જિસ વક્ત ઘબરાહટ હો તો ઇસ કલિમે કી કસરત ઘબરાહટ સે છુટકારે કા બાઈસ હોગી. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

3 બા'દે નમાઝે ઇશા એક સો ગ્યારહ મર્તબા

دینہ

1 : તર-જ-મએ કન્ઝુલ ઇમાન : અલ્લાહ હમ કો બસ હૈ
और क्या अशुभ कारसाज. (પૃ ૬૫, અલ ઇમરન: ૧૪૩)

“તુફૈલે હઝરતે દસ્ત ગીર દુશ્મન હોવે ઝેર”⁽¹⁾

પઢિયે (અવ્વલ વ આખિર ગ્યારહ ગ્યારહ બાર દુરૂદ શરીફ). યેહ તીનોં અમલ જો લિખે ગએ હૈં નિહાયત મુજર્બ (યા'ની મુઅસ્સિર) હોને કે સાથ સાથ આસાન ભી હૈં, ઈન સે ગફલત ન કી જાએ. જબ ભી કોઈ હાજત પેશ આએ તો ઈન તીનોં અ-મલોં મેં સે હર એક ઉસી તા'દાદ કે મુતાબિક પઢિયે જો લિખી ગઈ હૈ, તા'દાદ મેં કસ્દન (યા'ની ઈરાદતન) કમી યા ઝિયાદતી મત કીજિયે કે ચાબી કે દનદાને કમ યા ઝિયાદા હોને કી સૂરત મેં તાલા નહીં ખુલતા. અગર કોઈ મખ્સૂસ હાજત દરપેશ ન હો તો પહલા ઓર દૂસરા અમલ સો સો બાર રોઝાના પઢિયે. (અવ્વલ વ

مدینه

1 : તરજમા : હઝરતે ગૌસે આ'ઝમ દસ્ત ગીર رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કે તુફૈલ દુશ્મન મગ્લૂબ હો.



आभिर तीन तीन बार दुरुद शरीफ़)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

पत्मे कुरआन
دِينِهِ

औलियाअे कामिलीन
کا ءرشاء है :
رَحْمَهُمُ اللهُ الْمُبِينِ

बिला शुभा तिलावते कुरआन छाजतें बर आने
के लिये मुजर्रब है. जितना भी हो सके रोजाना
अदब के साथ पढते रहिये. अगर जैल में दिये
हुअे तरीके पर पढे तो बहुत अख्शा है के
إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ जल्द ही काम्याबी होगी. जुमुआ
के दिन से शुरुअ करे और जुमा'रात को कुरआन
पत्म. तिलावत की तरतीब येह हो :

બરોઝે જુમુઆ	સૂ-રતુલ ફાતિહા	તા સૂ-રતુલ માઈદહ
બરોઝે હફતા	સૂ-રતુલ અન્આમ	તા સૂ-રતુતૌબહ
બરોઝે ઈતવાર	સૂ-રતુ યૂનુસ	તા સૂ-રતુ મરયમ
બરોઝે પીર	સૂ-રતુ طه	તા સૂ-રતુલ કસસ
બરોઝે મંગલ	સૂ-રતુલ અનબૂત	તા સૂ-રતુ ص
બરોઝે બુધ	સૂ-રતુઝુમર	તા સૂ-રતુરહમાન
બરોઝે જુમા'રાત	સૂ-રતુલ વાકિઅહ	તા સૂ-રતુન્નાસ

ખલ્વત વ તન્હાઈ મેં પઢિયે, દરમિયાને તિલાવત બાત ન કીજિયે. હર મુહિમ વ જાઈઝ કામ કે હુસૂલ કે લિયે લગાતાર બારહ મર્તબા ખત્મ શરીફ કો ઈકસીરે આ'ઝમ યકીન કીજિયે.

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد


દુરુદે ર-ઝવિય્યા (1)

صَلَّى اللهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَإِلَيْهِ، صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ، صَلَاةٌ وَسَلَامٌ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ ط

ઊપર દિયે હુએ દુરુદો સલામ કો બા'દ નમાઝે જુમુઆ મજમઅ કે સાથ મદીનએ તયિબા રાદાહાલ્લા શરફાઉત્તેઝિમા કી તરફ મુંહ કર કે દસ્ત બસ્તા ખડે હો કર સો બાર પઢિયે. જહાં જુમુઆ ન હોતા હો, જુમુઆ કે દિન નમાઝે સુબહ ખ્વાહ ઝોહર યા અસ્ર કે બા'દ પઢિયે જો કહીં અકેલા હો તન્હા પઢે. યૂંહી ઇસ્લામી બહનેં અપને અપને ઘરોં મેં

دینہ

1: આ'લા હઝરત, ઇમામે અહલે સુન્નત મૌલાના શાહ અહમદ રઝા ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن نے ઇસ મેં તીન દુરુદ શરીફ યકજા ફરમાએ હેં લિહાઝા આપ કી નિસ્બત સે ઇસ કા નામ “દુરુદે ર-ઝવિય્યા” હૈ.



પઢેં. (પાક વ હિન્દ મેં સીધે હાથ કી તરફ મુડ કર ખડે હોને કી ઝરૂરત નહીં, કિબ્લા રૂ ખડે રહને સે ભી મદીનએ મુનવ્વરહ **رَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** કી તરફ રુખ હો જાતા હૈ)

“મુસ્તફા પર કરોડોં સલામ” કે સતરહ હુરફ કી નિસ્બત સે “દુરદો સલામ કે 17 મ-દની ફૂલ”

જો મીઠે મીઠે આકા મક્કી મ-દની મુસ્તફા **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** સે મહબ્બત રખેંગે, જો ઉન કી અ-ઝમત તમામ જહાન સે ઝિયાદા દિલ મેં રખેંગે, જો ઉન કી શાને પાક ઘટાને ઓર ઉન કા ઝિકે પાક મિટાને કી કોશિશ કરને વાલોં સે દૂર વ નુફૂર રહેંગે. ઐસોં સે દિલ સે બેઝાર રહેંગે, ઉન



આશિકાને રસૂલ મેં સે જો કોઈ ભી દુરુદો સલામ પઢેગા ઉસ કે લિયે બે શુમાર ફાએદે હૈં, ઈસ ઝિમ્ન મેં 17 મ-દની ફૂલ પેશ કિયે જાતે હૈં :

- ઈસ કે પઢને વાલે પર અલ્લાહ તઆલા તીન હઝાર રહમતેં ઉતારેગા. ● ઉસ પર દો હઝાર બાર અપના સલામ ભેજેગા. ● પાંચ હઝાર નેકિયાં ઉસ કે નામએ આ'માલ મેં લિખેગા. ● ઉસ કે પાંચ હઝાર ગુનાહ મુઆફ ફરમાએગા. ● ઉસ કે પાંચ હઝાર દ-રજે બુલન્દ ફરમાએગા. ● ઉસ કી પેશાની પર લિખ દેગા કે યેહ મુનાફિક નહીં. ● ઉસ કે માથે (યા'ની પેશાની) પર તહરીર ફરમાએગા કે યેહ દોઝખ સે આઝાદ હૈ. ● અલ્લાહ ઉસે કિયામત કે દિન

शहीदों के साथ रहेगा. ① उस के माल में
 तरक्की देगा. ② उस की औलाद और औलाद की
 औलाद में ब-र-कत देगा. ③ दुश्मनों पर
 ग-लबा देगा. ④ दिलों में उस की महब्बत
 रहेगा. ⑤ किसी दिन ज्वाब में ताजदारे
 रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जियारत की
 सआदत ईनायत फरमायेगा. ⑥ ईमान पर
 जातिमा होगा. ⑦ कियामत में रसूलुल्लाह
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उस से मुसा-फ़हा फरमायेंगे.
 ⑧ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शफ़ाअत उस
 के लिये वाजिब होगी. ⑨ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से



अैसा राकी डोगा के कभी नाराज न डोगा. (1)


صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

नेकी की दा'वत के 6 अहम म-दनी कूल

1 हर आकिल व बालिग इस्लामी भाई और इस्लामी बहन पर रोजाना पांच वक्त की नमाज इर्ज है. इस्लामी भाइयों को मस्जिद व जमाअत का इत्तिआम भी वाजिब है. बे नमाज गोया तस्वीर नुमा इन्सान है के ज़ाहिरि सूरत तो इन्सान की मगर इन्सान का सा काम कुछ नहीं. बे नमाज वोही नहीं जो कभी नमाज

دينه

1 : मुलज्जस अज हयाते आ'ला हजरत, जि. 1, स. 713, 714




न पढे बढके जो अेक वक्त की नमाज भी कस्दन
छोडे वोह बे नमाज है. किसी की नोकरी,
मुला-जमत ज्वाह तिजारत वगैरा किसी हाजत
के सबब नमाज कजा कर देनेी सप्त ना शुकी,
परले द-रजे की नादानी और गुनाहे कबीरा है.
कोई आका यहां तक के काफिर का भी अगर
नोकर हो तो वोह अपने मुलाजिम को नमाज से
नहीं रोक सकता और अगर नमाज न पढने दे
तो ऐसी नोकरी ही कत्अन हराम है. नीज ऐसी
नोकरी भी ना जाईज है जिस में बिदा उम्रे
शर-ई इर्ज नमाज की जमाअत तर्क करनी पडे.
याद रहे के कोई वसीलअे रिज़्क नमाज जो कर
ब-र-कत नहीं ला सकता, रिज़्क तो उसी के



दस्ते कुदरत में है जिस ने नमाज इर्ज की
और इस के तर्क पर सप्त गजब इरमाता है.

وَالْعِيَاذُ بِاللَّهِ تَعَالَى (या'नी और हम अल्लाह
तआला की पनाह पकडते हैं)

2 अगर **مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** आप पर कजा नमाजें
बाकी हैं तो सज का असा हिसाज लगाईये के
अन्दाजे में बाकी न रह जाअें जियादा हो जाअें
तो हरज नहीं और वोह सज नमाजें ज कदरे
ताकत रहता रहता जल्द ही अदा कर लीजिये,
काहिली (सुस्ती) मत कीजिये के मौत का वक्त
मा'लूम नहीं. याद रहिये ! जब तक इर्ज नमाजें
जिम्मे पर बाकी रहती हैं कोई नइल नमाज
कबूल नहीं की जाती. कजा नमाजें जब मु-तअदद



હોં મ-સલન સો બાર કી નમાઝે ફજા કઝા હૈ તો હર બાર યૂં નિયત કીજિયે કે સબ મેં પહલી વોહ ફજા જો મુઝ સે કઝા હુઈ. ઈસી તરહ ઝોહર વગૈરા હર નમાઝ મેં નિયત કીજિયે. કઝા મેં પાંચોં નમાઝોં કી ફઝ રકઅતેં ઓર વિત્ર મિલા કર હર દિન ઓર રાત કી બીસ રકઅતેં અદા કી જાતી હૈં. ઈસ કે તફ્સીલી અહકામ જાનને કે લિયે દા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કા મત્બૂઆ રિસાલા, **“કઝા નમાઝોં કા તરીકા”** પઢ લીજિયે.

3 જિતને ભી રોઝે કઝા હુએ હોં વોહ દૂસરે માહે ર-મઝાન શરીફ કી તશરીફ આ-વરી સે પહલે પહલે અદા કર લિયે જાએં કે હદીસ શરીફ મેં હૈ : જબ તક પિછલે ર-મઝાન કે રોઝોં



કી કઝા ન કર લી જાએ અગલે કબૂલ નહીં હોતે. ⁽¹⁾

4 અગર આપ સાહિબે માલ હૈં યા'ની આપ કી મિલકિયત મેં નિસાબ કી કદર માલ હો ઓર ઝકાત કી શરઘત પાઈ જાએ ⁽²⁾ તો ઝકાત ભી અદા કીજિયે. અગર પિછલે બરસોં કી ઝકાત બાકી હો તો ફૌરન હિસાબ કર કે વોહ ભી અદા કર દીજિયે. યાદ રખિયે ! સાલ મુકમ્મલ હોને કે બા'દ બિલા ઉઝરે શર-ઈ દેર લગાના ગુનાહ હૈ. શુરૂએ સાલ સે રફતા રફતા ઝકાત દેતે રહિયે ફિર સાલ મુકમ્મલ હોને પર હિસાબ કર લીજિયે

دینہ

1 : તફ્સીલી મા'લૂમાત કે લિયે “ફૈઝાને સુન્નત” કે બાબ ફૈઝાને ર-મઝાન કા મુતા-લઆ ફરમાઈયે.

2 : તફ્સીલાત કે લિયે મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ કિતાબ “ફૈઝાને ઝકાત” મુલા-હઝા ફરમાઈયે.

अगर पूरी उकात अदा हो गइ तो बेहतर वरना
 जितनी भी बाकी हो इौरन अदा इरमा दीजिये
 और अगर कुछ जियादा उकात निकल गइ है तो
 वोह आयिन्दा साल में काट लीजिये. अल्लाह
 عزوجل किसी का नेक अमल जायेअ नहीं करता.

5 साहिबे इस्तिताअत पर उज भी इर्से
 आ'उम है. अल्लाह عزوجل ने इस की इर्जियत के
 बारे में इशाद इरमाया :

وَاللَّهُ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ

(1) سَبِيلًا ۖ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ﴿٩٧﴾

مدینه

1 : तर-उ-मअे कन्जुल इमान : और अल्लाह के लिये लोगों पर
 इस घर का उज करना है जो इस तक चल सके और जो मुन्किर हो
 तो अल्लाह सारे जहान से बे परवाह है. (प ६, अल عمران: ११७)



તાજદારે મદીના, રાહતે કલ્બો સીના صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
ને તારિકે હજ કે બારે મેં ફરમાયા કે ચાહે યહૂદી
હો કર મરે યા નસરાની હો કર.

(તરમ્ઝી જ ૨ વ ૨૧૯ હદીથ ૮૧૨)

6 ઝૂટ, ગીબત, ચુગલી, ગાલી ગલોચ,
ઝિના, લિવાતત, ઝુલ્મ, ખિયાનત, રિયા,
તકબ્બુર, દાઢી મુંડવાના યા કતરવા કર એક મુઠ્ઠી
સે ઘટાના, ફાસિકોં કી વઝૂઅ અપનાના, ફિલ્મેં
ડિરામે દેખના, ગાને બાજે સુનના વગૈરા, હર
બુરી ખસ્લત સે બચિયે. જો અલ્લાહ વ રસૂલ
عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
અલ્લાહ વ રસૂલ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કે વા'દે
સે ઉસ કે લિયે જન્નત હૈ.

अस्लाल की रहमत से तो जन्नत ही मिलेगी
औ क़ाश ! महल्ले में जगल उन के मिली हो

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

याद दिहानी के रंग बिरंगे म-दनी सूल

याद दारी के वक़्त झाड़न ठु
हम ख़न्दां बँदुं व तुग़रियां
आं चूनां जी के वक़्त मूदन ठु
हम ग़रियां शुंद व ठुख़न्दां

या'नी याद रष ! तेरी पैदाईश के वक़्त सभ
षन्दां थे (या'नी हंस रहे थे) मगर तू गिर्या
(या'नी रो रहा था) औसा ज़ना ज़ के तेरी मौत के
वक़्त सभ गिर्या हों और तू षन्दां.

औ ईस्लामी भाई और ईस्लामी बहन !



ઇપ્લાસ સે અગર આપ યાદે ઇલાહી **عَزَّوَجَلَّ** મેં તઝરોઅ વઝારી કરતે રહે, હિજરો ફિરાકે મહબૂબ **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** મેં દિલ તપાં સીના બિર્યાં ઓર ગિર્યાં કનાં રહે તો **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** વક્તે ઇન્તિકાલ વિસાલે મહબૂબ **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** પા કર આપ શાદાં વ ફરહાં ઓર આપ કે ફિરાક પર મખ્લૂક નાલાં વ ગિર્યાં હોગી.

● ઐ ઇસ્લામી ભાઈ ઓર ઇસ્લામી બહન !
અપને વોહ તમામ અહૂદ યાદ રખિયે જો કે આપ ને ખુદા **عَزَّوَجَلَّ** સે ઇસ નાચીઝ વ ગુનહગાર બન્દે કે હાથ પર કિયે હેં હક તઆલા સે અપને હક મેં દુઆ ભી કરતે રહિયે કે જૈસી ચાહિયે વૈસી

पाबन्दिये अहकामे भुटा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में जियूं और
ता दमे वापसीं सुन्नतों की पाबन्दी करता रहूं.

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

● औ ईस्लामी भाई और ईस्लामी बहन! आप ने
अहूँद किया है के मजहबे मुहम्मद अहले सुन्नत
पर काईम रहेंगे और हर बह मजहब की सोहबत
से बचते रहेंगे, इस पर सप्ती से काईम रहिये.

(1) فَلَا تَتُوتَنَّ إِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُونَ ط (۱۳۲)

● औ ईस्लामी भाई और ईस्लामी बहन! याद
रखिये! आप ने अहूँद किया है के नमाज रोझे
और हर ईज को शरीअते मुतहहिरा के मुताबिक

دینہ


1 : तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : तो न मरना मगर मुसल्मान.

(प २, البقره: १३२)



अदा करते रहेंगे और गुनाहों से बचते रहेंगे
पुढا عَزَّوَجَلَّ करे आप अपने अह्द पर काँम रहें.
याद रबिये ! अह्द तोडना हराम है और सप्त
औँ और निहायत बुरा काम है. ईशारे अह्द
लाजिम है अगर्ये किसी अदनासे अदना मख्लूक
से किया हो. येह अह्द तो आप ने ખાલિક عَزَّوَجَلَّ
से किये हैं.

● औ ईस्लामी भाई और ईस्लामी बहन !
भौत को याद रबिये, अगर भौत को याद रभेंगे तो
إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ हलाकत के मकाम से छुटकारा
मिलेगा, दीनो ईमान सलामत रहेंगे और
ईत्तिबाअे सुन्नत की सआदत भी नसीब होगी
और गुनाहों से तहङ्कुल भी हासिल होगा.



● એ ઈસ્લામી ભાઈ ઓર ઈસ્લામી બહન !
આજ જાગ લીજિયે તાકે મૌત કે બા'દ
સુખ ચૈન, ઈત્મીનાન વ આરામ કી નીંદ
સોના મિલે. ફિરિશ્તે કબ્ર મેં આપ સે કહેં :
“**فَكُنْ مِمَّا الْعَرُوسِ**” (યા'ની દુલ્હન કી તરહ સો જા)

જાગના હૈ જાગ લે અફલાક કે સાએ તલે
હશર તક સોતા રહેગા ખાક કે સાએ તલે

● એ ઈસ્લામી ભાઈ ઓર ઈસ્લામી બહન ! દુન્યા
પર મત ફરેફતા હોં. દુન્યા પર હદ સે ઝિયાદા
શૈદા હોના હી ખુદા **عَزَّوَجَلَّ** સે ગાફિલ હોના હૈ.



બે વફા દુન્યા પે મત કર એ'તિબાર
તૂ અચાનક મૌત કા હોગા શિકાર

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ



ઈસ્લામી બહને તવજૂબે ફરમાએ

ઈસ્લામી બહનો ! અપને મખસૂસ અય્યામ સે મુ-તઅલ્લિક મા'લૂમાત આપ કે લિયે લાઝિમી હૈ, ઈસ સિલ્સિલે મેં **“બહારે શરીઅત”** કા દૂસરા હિસ્સા ઝરૂર પઠ લીજિયે યા કિસી ઈસ્લામી બહન સે પઠવા કર સુન લીજિયે. નીઝ પઠે સે મુ-તઅલ્લિક દા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ કિતાબ, **“પઠે કે બારે મેં સુવાલ જવાબ”** કા મુતા-લઆ કર લીજિયે. પઠે કે મુ-તઅલ્લિક એક રિવાયત મુલા-હઝા હો યુનાન્થે હઝરતે સય્યિ-દતુના ઉમ્મે સ-લમહ **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** ફરમાતી હૈં કે મેં ઓર હઝરતે મૈમૂના **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** હમ દોનોં સરકારે



 મદીના صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ کی ખિદમते બા
 બ-ર-કત में હાज़िर थीं के (नाबीना सहाबी)
 હઝરતે અબ્દુલ્લાહ બિન ઉમ્મે મક્તૂમ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ
 આએ. સરકારે આલી વકાર صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 ને હમ દોનોં સે ફરમાયા : “પદા કર લો.” મેં ને
 અર્ઝ કી : મેરે આકા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ! વોહ તો
 નાબીના હૈં, હમેં નહીં દેખેંગે. ઇસ પર મદીને કે
 તાજદાર صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ફરમાયા : “ક્યા
 તુમ દોનોં ભી નાબીના હો ? તુમ ઉન્હેં નહીં દેખ
 પાઓગી?” (ترمذی ج ٤ ص ٣٥٦ حدیث ٢٧٨٧)

ઇસ્લામી બહનો ! મા'લૂમ હુવા કે જિસ
 તરહ મદ કે લિયે યેહ હાઝિમી હૈ કે ગૈર ઔરત
 કો ન દેખે ઇસી તરહ ઔરત ભી ગૈર મદ કો
 દેખને સે બચે. અલબત્તા મદ કે ગૈર ઔરત કો



દેખને ઔર ઔરત કે ગૈર મર્દ કો દેખને મેં થોડા
સા ફર્ક હૈ યુનાન્યે દા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી
ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ કિતાબ,
બહારે શરીઅત જિલ્દ 3 સફહા 443 પર
મસ્અલા નમ્બર 6 હૈ : ઔરત કા મર્દે અજનબી
કી તરફ નઝર કરને કા વોહી હુકમ હૈ, જો મર્દ કા
મર્દ કી તરફ નઝર કરને કા હૈ ઔર યેહ ઉસ વક્ત
હૈ કે ઔરત કો યકીન કે સાથ મા'લૂમ હો કે ઉસ
કી તરફ નઝર કરને સે શહવત નહીં પૈદા હોગી
ઔર અગર ઈસ કા શુબા ભી હો તો હરગિઝ
નઝર ન કરે.

(عالمگیری ج ۵ ص ۳۲۷)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

ઇસ્લામી બહનોં કે લિયે 4 મ-દની ફૂલ

1 ઇસ્લામી બહન ગૈર મદ કે જિસ્મ કો હરગિઝ ન ધૂએ, ઉસ સે હાથ ન મિલાએ, હતા કે અપને ના મહરમ પીર કા હાથ ભી ન ચૂમે ઓર અપને સર પર હાથ ભી ન ફિરવાએ.

2 ઇસ્લામી બહન અપને સર કે બાલ જો કંઘી વગૈરા કરને મેં નિકલે હૈં વોહ કિસી ઐસી જગહ ન ડાલે જહાં ગૈર મદ કી નઝર પડે.

3 ચચાઝાદ, તાયાઝાદ, ખાલાઝાદ, ફૂફીઝાદ, મામૂઝાદ મેં ભી પદેં કા હુકમ હૈ ઓર દેવર ભાભી કે દરમિયાન બે પદેંગી તો મૌત કી તરહ બાઈસે હલાકત હૈ. નીઝ બહનોઈ, ખાલૂ,



ફૂંફા ઓર જેઠ સે ભી પદા હૈ.

4 ઇસ્લામી બહનેં અપને ઘર કે બાહર ન ચબૂતરોં પર બૈઠેં ન ખિડકિયોં વગૈરા સે ઝાંકેં કે ઇસ તરહ ભી ફિતને કા દરવાઝા ખુલતા હૈ.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

દા'વતે ઇસ્લામી

પ્યારે ઇસ્લામી ભાઈયો ઓર ઇસ્લામી બહનો ! આપ કો ચાહિયે કે તબ્લીગે કુરઆનો સુન્નત કી આલમગીર ગૈર સિયાસી તહરીક દા'વતે ઇસ્લામી કે સાથ તન મન ઓર ધન કે સાથ હર મુમ્કિન તઆવુન કરેં, જહાં જહાં ઇસ કે હફતાવાર સુન્નતોં ભરે ઇજતિમાઅ હોતે હૈં હર મુમ્કિન સૂરત મેં ઉસ મેં

શિર્કત ફરમાએ. ઈસી તરહ જહાં જહાં ફેઝાને સુન્નત કા દર્સ હોતા હૈ વહાં ભી શરીક હોં. જહાં દર્સે ફેઝાને સુન્નત કા સિલ્સિલા નહીં હૈ વહાં દર્સ જારી કરવાએ. તમામ ઈસ્લામી ભાઈ હર માહ કમ અઝ કમ ત્રીન દિન સુન્નતોં કી તરબિય્યત કે મ-દની કાફિલે મેં આશિકાને રસૂલ કે સાથ સુન્નતોં ભરા સફર કરેં.

ઐ હમારે પ્યારે પ્યારે અલ્લાહ **عَزَّوَجَلَّ**! હમ સબ કો મુબલ્લિગે દા'વતે ઈસ્લામી, અપના પસન્દીદા બન્દા, આશિકે રસૂલ ઓર આશિકે મદીના બના ઓર હમારી બે હિસાબ મગિરત ફરમા.

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

ઉન દો કા સદકા જિન કો કહા : મેરે ફૂલ હેં
કીજે રઝા કો હશર મેં ખન્દાં મિસાલે ગુલ

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ

તવારીખે આ'રાસ વ મદફન શરીફ

નં.	અસ્માએ ગિરામી	રિહલત	મઝારે અકદસ
1	શહન્શાહે મદીના صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ	12 રબીઅવ્વલ 11 હિ.	મદીનએ મુનવ્વરહ
2	હઝરતે મૌલા અલી رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ	21 ર-મઝાનુલ મુબારક 40 હિ.	નજફ શરીફ
3	હઝરતે ઇમામે હુસૈન رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ	10 મુહર્રમુલ હરામ 61 હિ.	કરબલાએ મુઅલ્લા
4	હઝરતે ઇમામ ઝૈનુલ આબિદીન رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	14 રબીઉલ અવ્વલ 94 હિ.	મદીનએ તય્ચિબા
5	હઝરતે ઇમામ બાકિર رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	7 ઝિલ હિજ્જા 114 હિ.	//
6	હઝરતે ઇમામ જા'ફરે સાદિક رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	15 રજબ 148 હિ.	//
7	હઝરતે ઇમામ મૂસા કાઝિમ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	5 રજબ 183 હિ.	બગદાદ શરીફ
8	હઝરતે ઇમામ અલી રઝા رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	21 ર-મઝાનુલ મુબારક 203 હિ.	મશહદે મુકદ્દસ
9	હઝરતે મા'રૂફ કર્ખી رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	2 મુહર્રમુલ હરામ 200 હિ.	બગદાદ શરીફ
10	હઝરતે ઇમામ સરી સકતી رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	6 ર-મઝાનુલ મુબારક 253 હિ.	//
11	હઝરતે ઇમામ જુનૈદ બગદાદી رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	27 રજબ 298 હિ.	//
12	હઝરતે ઇમામ શિબ્લી رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	27 ઝિલ હિજ્જા 334 હિ.	//

13	હઝરતે ઇમામ શૈખ અબ્દુલ વાહિદ <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	26 જુમાદલ આબિર 410 હિ.	બગદાદ શરીફ
14	હઝરતે ઇમામ અબુલ ફરહ તરતૂસી <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	3 શા'બાનુલ મુઅઝ્ઝમ 447 હિ.	//
15	હઝરતે ઇમામ અબુલ હસન હકકારી <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	૫કુમ મુહર્રમુલ હરામ 486 હિ.	//
16	હઝરતે ઇમામ અબૂ સઈદ મખ્ઝૂમી <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	12 મુહર્રમુલ હરામ 513 હિ.	//
17	હઝરતે ગૌસે આ'ઝમ <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	11 રબી'ઉલ આબિર 561 હિ.	//
18	હઝરતે સય્યિદ અબ્દુર્રઝઝાક <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	6 શવ્વાલુલ મુકર્રમ 623 હિ.	//
19	હઝરતે સય્યિદ અબૂ સાલેહ નસ્ર <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	27 ર-જબુલ મુરજ્જબ 632 હિ.	//
20	હઝરતે સય્યિદ મુહ્યુદ્દીન અબૂ નસ્ર <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	27 રબી'ઉલ અવ્વલ 656 હિ.	//
21	હઝરતે સય્યિદ અલી બગદાદી <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	23 શવ્વાલુલ મુકર્રમ 739 હિ.	//
22	હઝરતે સય્યિદ મૂસા <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	13 ર-જબુલ મુરજ્જબ 763 હિ.	//
23	હઝરતે સય્યિદ હસન <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	26 સ-ફરુલ મુઝફ્ફર 781 હિ.	//
24	હઝરતે સય્યિદ અહમદ જીલાની <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	19 મુહર્રમુલ હરામ 853 હિ.	//
25	હઝરતે શૈખ બહાઉદ્દીન <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	11 ઝિલ હિજ્જા 921 હિ.	દૌલતઆબાદ
26	હઝરતે ઇબ્રાહીમ ઈરચી <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	15 રબી'ઉલ આબિર 953 હિ.	દેહલી



27	હઝરત મુહમ્મદ નિઝામુદ્દીન ત્રિકારી رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	9 ઝી કા'દહ 981 હિ.	કાકોરી શરીફ
28	હઝરત કાઝી ઝિયાઉદ્દીન મા'રુફ જિયા رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	21 ર-જબુલ મુરજજબ 989 હિ.	લખનઉ
29	હઝરત જમાલુલ ઔલિયા رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	શબે ઈદુલ ફિત્ર 1047 હિ.	કોડા જહાંઆબાદ
30	હઝરતે સય્યિદ મુહમ્મદ કાલપવી رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	6 શા'બાનુલ મુઅઝ્ઝમ 1071 હિ.	કાલપી શરીફ
31	હઝરતે સય્યિદ અહમદ કાલપવી رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	19 સ-ફરુલ મુઝફ્ફર 1084 હિ.	//
32	હઝરતે સય્યિદ ફઝલુલ્લાહ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	14 ઝી કા'દહ 1111 હિ.	//
33	હઝરતે સય્યિદ બ-રકતુલ્લાહ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	10 મુહર્રમુલ હરામ 1142 હિ.	મારહૂરા મુતહ્હરા
34	હઝરતે સય્યિદ આલે મુહમ્મદ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	16 ર-મઝાનુલ મુબારક 1164 હિ.	//
35	હઝરતે શાહ હમ્ઝા رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	14 મુહર્રમુલ હરામ 1198 હિ.	//
36	હઝરતે સય્યિદ શાહ આલે અહમદ અચ્છે મિયાں رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	17 રબીઉલ અવ્વલ 1225 હિ.	//
37	હઝરતે સય્યિદ શાહ આલે રસૂલ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	18 ઝિલ હિજ્જા 1296 હિ.	//
38	ઈમામ અહમદ રઝા ખાન رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	25 સ-ફરુલ મુઝફ્ફર 1340 હિ.	બરેલી શરીફ
39	શૈખ ઝિયાઉદ્દીન મ-દની رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	4 ઝિલ હિજ્જા 1401 હિ.	મદીનએ તથ્થિબા
40	હઝરત મૌલાના અબ્દુસસલામ કાદિરી رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ		

ફેહરિસ્ત

મઝમૂન	સફલ	મઝમૂન	સફલ
દુરૂદ શરીફ કી ફઝીલત	1	સૂ-રતુલ કહ્ફ કી આખિરી ચાર આયાત	33
શ-જ-રએ આલિયા કાદિરિયા ર-ઝવિયા પઠને કે 7 મ-દની ફૂલ	2	બેદાર હોને પર પઢિયે	34
દિન યા રાત મેં કિસી ભી એક વક્ત રોઝાના પઢિયે	4	તહજજુદ	35
પન્જગાના નમાઝ કે બા'દ કે સાત અવરાદ	5	કામ અટક ગએ હોં તો.....	37
પન્જ ગન્જે કાદિરિયા	7	ખત્મે કુરઆન	40
સુબ્હ વ શામ પઠને કે 10 આ'માલ	11	દુરૂદે ર-ઝવિયા	42
સચ્ચિદુલ ઈસ્તિગ્ફાર	18	દુરૂદો સલામ કે 17 મ-દની ફૂલ	43
સિર્ફ સુબ્હ પઠને કે સાત આ'માલ	20	નેકી કી દા'વત કે 6 અહમ મ-દની ફૂલ	46
ફાતિહએ સિલ્સિલા	23	યાદ દિહાની કે રંગ બિરંગે મ-દની ફૂલ	53
દુરૂદે ગૌસિયા	25	ઈસ્લામી બહનેં તવજજોહ ફરમાએં	58
બા'દે નમાઝે ફજ વ અસ્ર	25	ઈસ્લામી બહનોં કે લિયે 4 મ-દની ફૂલ	61
બા'દે નમાઝે ફજ વ મગરિબ	26	દા'વતે ઈસ્લામી	62
બા'દે નમાઝે ફજ હજ વ ઉમ્મે કા સવાબ	28	તવારીખે આ'રાસ વ મદફન શરીફ	64
રાત કે વક્ત કે ચાર આ'માલ	29	શ-જ-રએ આલિયા (મન્ઝૂમ)	68
સોતે વક્ત કે 7 આ'માલ	31	મઆખિઝો મરાજેઅ	73



શ-જ-રએ આલિયા

હઝરાતે મશાઈખે કિરામ સિલ્સિલએ મુબા-રકા
કાદિરિયા ર-ઝવિયા ઝિયાઈયા

યા ઈલાહી રહ્મ ફરમા મુસ્તફા¹ કે વાસિતે

યા રસૂલલ્લાહ કરમ કીજે ખુદા કે વાસિતે

મુશિકલેં હલ કર શહે મુશિકલ કુશા² કે વાસિતે

કર બલાએં રદ શહીદે કરબલા³ કે વાસિતે

સય્યિદે સજ્જાદ⁴ કે સદકે મેં સાજિદ રખ મુઝે

ઈલ્મે હક દે બાકિરે⁵ ઈલ્મે હુદા કે વાસિતે

સિદ્કે સાદિક⁶ કા તસદુક સાદિકુલ ઈસ્લામ કર

બે ગઝબ રાઝી હો કાઝિમ⁷ ઓર રઝા⁸ કે વાસિતે

બહરે મા'રૂફો⁹ સરી¹⁰ મા'રૂફ દે બે ખુદ સરી
 જુન્દે હક મેં ગિન જુનેદે¹¹ બા સફા કે વાસિતે
 બહરે શિબ્લી¹² શેરે હક દુન્યા કે કુતોં સે બયા
 એક કા રખ અબ્દે¹³ વાહિદ બે રિયા કે વાસિતે
 બુલ ફરહ¹⁴ કા સદકા કર ગમ કો ફરહ દે હુસ્નો સા'દ
 બુલ હસન¹⁵ ઓર બૂ સઈદે¹⁶ સા'દે ઝા કે વાસિતે
 કાદિરી કર કાદિરી રખ કાદિરિય્યોં મેં ઉઠા
 કદરે અબ્દુલ કાદિરે¹⁷ કુદરત નુમા કે વાસિતે
 ① أَحْسَنَ اللَّهُ لَهُمْ رِزْقًا સે દે રિઝકે હસન
 બન્દએ રઝઝાક¹⁸ તાજુલ અસ્ફિયા કે વાસિતે
 નસ્ર¹⁹ અબી સાલેહ કા સદકા સાલેહો મન્સૂર રખ
 દે હયાતે દીં મુહિયે²⁰ જાં ફિઝા કે વાસિતે

مدینه

① યા'ની અલ્લાહ તઆલા ને ઉન્હેં અચ્છી રોઝી અતા ફરમાઈ.



તૂરે ઈરફાનો ઉલુવ્વો હમ્દો હુસ્ના વ બહા
દે અલી²¹ મૂસા²² હસન²³ અહમદ²⁴ બહા²⁵ કે વાસિતે
બહરે ઈબ્રાહીમ²⁶ મુઝ પર નારે ગમ ગુલઝાર કર
ભીક દે દાતા મિકારી²⁷ બાદશા કે વાસિતે
ખાનએ દિલ કો ઝિયા દે રૂએ ઈમાં કો જમાલ
શહ ઝિયા²⁸ મૌલા જમાલુલ²⁹ ઔલિયા કે વાસિતે
દે મુહમ્મદ³⁰ કે લિયે રોઝી કર અહમદ³¹ કે લિયે
ખ્વાને ફઝલુલ્લાહ³² સે હિસ્સા ગદા કે વાસિતે
દીનો દુન્યા કે મુઝે બ-રકાત દે બ-રકાત³³ સે
ઈશકે હક દે ઈશકી ઈશકે ઈન્તિમા^① કે વાસિતે
હુબ્બે અહલે બૈત દે આલે³⁴ મુહમ્મદ કે લિયે
કર શહીદે ઈશકે હમ્ઝા³⁵ પેશવા કે વાસિતે

دینہ

① યા'ની ઈશક કી નિસ્બત રખને વાલે.

દિલ કો અચ્છા તન કો સુથરા જાન કો પુરનૂર કર
 અચ્છે પ્યારે શમ્સે³⁶ દીં બદરુલ ઉલા કે વાસિતે
 દો જહાં મેં ખાદિમે આલે રસૂલુલ્લાહ કર
 હઝરતે આલે³⁷ રસૂલે મુક્તદા કે વાસિતે
 કર અતા અહમદ રઝાએ અહમદે મુરસલ મુઝે
 મેરે મૌલા હઝરતે અહમદ રઝા³⁸ કે વાસિતે
 પુર ઝિયા કર મેરા ચેહરા હશર મેં એ કિબ્રિયા
 શહ ઝિયાઉદ્દીન³⁹ પીરે બા સફા કે વાસિતે

① أَحْيَا فِي الدِّينِ وَالدُّنْيَا سَلَامٌ بِالسَّلَامِ

કાદિરી અબ્દુસ્સલામે⁴⁰ ખુશ અદા^② કે વાસિતે

دینہ

① યા'ની હમ્નેં દીન વ દુન્યા મેં સલામતી અતા ફરમા. ② કબ્લ અઝીં મત્બૂઆ શ-જરે કે શે'ર કે અન્દર “અબ્દુસ્સલામ અબ્દે રઝા” મેં ચૂંકે ફન્ની એ'તિબાર સે “મીમ” ગિર રહા થા. લિહાઝા તરમીમ કી ગઈ હૈ.



ઈશકે અહમદ મેં અતા કર ચશમે તર સોઝે જિગર

યા ખુદા ઈલ્યાસ⁴¹ કો અહમદ રઝા કે વાસિતે

સદકા ઈન આ'યાં કા દે છ ઐન ઈઝ્ઝ, ઈલ્મો અમલ

અફ્વો ઈરફાં આફિયત ઈસ બે નવા કે વાસિતે



યા અલ્લાહ **عَزَّوَجَلَّ** ઈન મશાઈબે કિરામ કી બ-ર-કત સે ઈસ

બન્દે/બન્દી કાદિરી ર-ઝવી

વલ્દિયત.....

સાકિન.....

કા સીના મદીના બના.



صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ **أَمِينٌ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ**

મુઅર્રબા

14

સિ.હિ.

(۱۸۳۱-۱۸۳۲ء کے افسانوں کے ما'نا اور
دیگر دیکھنے والے ما'لومات کے لیے مکتب-ت-بیت
مدینہ کی کتاب **“شہدائے شہادت کی تاریخ
۱۸۳۱-۱۸۳۲ء”** (217 صفحات) مکتب-ت-بیت مدینہ)

ماخذ و مراجع

مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ	کتاب
دارالکتب العلمیہ بیروت	شعب الایمان	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	قرآن مجید
دارالکتب العلمیہ بیروت	الترغیب والترہیب	دارالکتب العلمیہ بیروت	بخاری
مرکز اہلسنت برکات رضا ہند	مدارج النبوت	دار ابن حزم بیروت	مسلم
دارالفکر بیروت	مرقاۃ	دار احیاء التراث العربی بیروت	ابوداؤد
دارالفکر بیروت	عالمگیری	دارالفکر بیروت	ترمذی
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	الوظیفۃ الکریمہ	دارالکتب العلمیہ بیروت	مصنف عبدالرزاق
مکتبۃ نبویہ مرکز الاولیاء لاہور	حیات اعلیٰ حضرت	دارالکتب العربی بیروت	دارمی
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	دارالکتب العلمیہ بیروت	اسنن الکبریٰ



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ آمَنَّا بِكَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** जो कुछ पढेंगे याद रहेगा. दुआ ये है :

**اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ**

तरजमा : **अै अल्लाह ! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल इरमा ! अै अ-अमत और बुजुर्गी वाले.**

(مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

(अवल आपिर अेक अेक बार दुइइ शरीफ़ पढ लीजिये.)

तालिबे गमे
मदीना
व अडीअ
व मकिरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



नाम रिसाला : **श-ज-रअे अतारिय्या**

पहली बार : **10,000**

नाशिर : **मक-त-अतुल मदीना अहमदआबाद**

म-दनी इतिहा : **किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं.**

किताब के ખરીदार मु-तवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां खराबी हो या सइहात कम हों या बाइनिंग में आगे पीछे हो गअे हों तो **मक-त-अतुल मदीना** से रुजूअ इरमाइये.

ક્યા મુરીદ બનને કે લિયે પીર કે હાથ પર હાથ રખના ઝરૂરી હૈ ?

ફરમાને ઈમામઅહમદ રઝા ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن :
 બ ઝરીઅએ કાસિદ યા ખત, મુરીદ હો સકતા હૈ.
 (ફતાવા ર-ઝવિયા, જિ. 26, સ. 285) “હિદાયા” મેં
 હૈ : જો હુકમખિતાબ (યા’ની મુખાતબ સે ગુફત-ગૂ) કા
 હૈ વોહી હુકમકિતાબ (યા’ની ખત) કા ભી હૈ (ہدایہ ۲۳۳)
 મા’લૂમહુવા કે મુરીદ બનને કે લિયે સામને હાઝિર હો
 કર હાથ પર હાથ રખ કર બૈઅત હોના શર્ત નહીં ઔર
 ઔરત તો ના મહરમ પીર કે હાથ પર હાથ રખ હી
 નહીં સકતી, બહર હાલ બૈઅતે ગાઈબાના ભી કાફી
 હૈ, લિહાઝા ફોન પર કોલ કર કે યા મેસેજ ભેજ કર યા
 ઈન્ટર નેટ પર મેલ કર કે યા મ-દની ચેનલ કે ઝરીઅ
 બૈઅત કરના ઔર બૈઅત હોના શરઅન જાઈઝ હૈ.

મક-ત-બતુલ મદીના®

દા’વતે ઈસ્લામી



ફેઝાને મદીના, શ્રી કોનિયા બગીચે કે સામને, મિરઝાપૂર, અહમદઆબાદ, ગુજરાત, ઇન્ડિયા
 Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net